भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी के सदस्य
कामरेड यापा नारायणा (हरिभूषण, लक्मू दादा) को
क्रांतिकारी जोहार!
केंद्रीय कमेटी व
तेलंगाना राज्य कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

जनयुद्ध के सेनानी और श्रेष्ठ सगठक
भाकपा (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी के सदस्य और तेलंगाना राज्य कमेटी के सचिव
कामरेड यापा नारायणा (हरिभूषण, लक्मू दादा) को क्रांतिकारी जोहार!

कामरेड यापा नारायणा (कामरेड हरिभूषण, लक्मू दादा) 50 वर्ष की जीवनी में 30 वर्ष तक भारत के क्रांतिकारी आंदोलन में अटूट प्रयास करने के दौरान 21 जून, 2021 को सुबह 9 बजे कोरोना महामारी से लड़ते हुए अपनी अंतिम सांस लिया। उन्होंने भाकपा (माओवादी) के केंद्रीय कमेटी के सदस्य के रूप में जिम्मेदारी निभाते हुए ही, तेलंगाना राज्य कमेटी के सचिव के बतौर काम किया। तेलंगाना राज्य कमेटी के बैठके संपन्न होने के बाद, उसकी निर्णयों का लेखन के दौरान तेज बुखार से शिकार हुए। इसके बावजूद निर्णयों का लेखन और कामरेडो को दिशानिर्देशन देना जारी रखा। वे लंबे समय से दम बीमारी, ब्रोंकाइटिस और रक्तचाप बीमारियों से जूझते रहे। उन बीमारियों के लिए दवाइयां लेते रहे। लेकिन बीमारियां कम नहीं बल्कि और तीखा हो गयीं। तेज बुखार और सांस लेने में तकलीफ बढ़ने के बाद, कोरोना होने का अनुमान लगाकर स्वाब परीक्षण करवाया गया, जिसमें पोजिटीव निकला। कोरोना के लिए दवाइयां लेते हुए कृत्रिम ऑक्सिजन देने के दौरान, सांस की समस्या और दिला दौरा पड़ने से उनकी शहादत हुई। क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय भूमिका अदा करने वाले युवा नेता का निधन देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन, विशेषकर तेलंगाना क्रांतिकारी आंदोलन के लिए अपूर्णीय क्षति है। आइएं! उनके अरमानों को अंतिम सांस तक जारी रखने की शपथ लेते हैं।

कामरेड यापा नारायणा के परिवार की पृष्ठभूमि - उनकी पढ़ाई

कामरेड यापा नारायणा मडागुड़ा गांव में एक आदिवासी परिवार रंगैया और पुन्नम्मा दंपत्ति के बड़े पुत्र के रूप में जन्म लिया। उनके बाद उस दंपत्ति को तीन बच्चे और तीन बच्चियां हुए। कामरेड यापा नारायणा छोटी उम्र से ही स्कूल जाते हुए, संतान में बड़े होने के नाते भाई व बहनों को स्कूल जाने प्रोस्ताहित कर आश्रम भेजते थे। इस तरह उनके भाई व बहन अच्छी पढ़ाई प्राप्त की। अविभक्त वरंगल जिला (वर्तमान महबूबाबाद जिला) के जंगली इलाके के दूरदराज गांव मडागुड़ा में

किसी भी तरह के सड़क या बिजली की सुविधा न होने वाले गांव में जन्म लेने के बावजूद, उन तमाम बाधाओं का सामना करते हुए दृढ़ता से अपनी पढ़ाई जारी रखा।

कामरेड यापा नारायणा के मां-बाप ने बहुत ही प्यार से उनकी परवरिश की। वे गरीबी से जूझते हुए भी, नारायणा को पढ़ाया। मां-बाप, मित्र व शिक्षकों की मदद से वे स्नातक (बी.ए.) तक पढ़ाई पूरा कर लिया। उस समय आदिवासियों में स्नातक पढ़ाई करना महत्वपूर्ण था। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा को मडागुड़ा में, इंटरमिडियट को नरसमपेटा में, 1988 में स्नातक (बी.ए.) पढ़ाई को हनुमकोंडा आर्ट्स एंड साइंस कोलेज में पूरा कर लिया। जब वे बी.ए. दूसरा वर्ष में थे, वे एलआईसी एजेंट के रूप में काम किया। स्नातक पढ़ाई के बाद, कुछ समय तक आई.टी.डी.ए. के अल्प सिंचाई विभाग में कार्य निरीक्षक के रूप में काम किया। क्रांतिकारी सोच रखने वाले कामरेड नारायणा ने वर्गचेतना के व्यापक सेवा दृष्टिकोण से गरीबों को कई सामाजिक विकास कार्यक्रम आयोजित किए।

आई.टी.डी.ए. के जरिए निवासहीन लोगों के लिए निवास बनाकर देना, पीने का पानी की समस्या से जूझने वाले लोगों के लिए पेयजल की सुविधा उपदब्ध कराना जैसे जनता की कई बुनियादी समस्याओं का हल निकालते थे। कामरेड हरिभूषण की जनता की सेवा को और उनके साथ रहने की पलों को अब भी स्थानीय जनता याद करती हैं।

कामरेड यापा नारायणा बहुत ही तेज आदमी थे। वे मोटा और बाहुबल शरीर वाले थे। वे गोल वाले चेहरे, चीता जैसा चलन, तीखी आंखें और सघन केश वाले थे। छोटी उम्र से मेहनती जीवन था और पार्टी में लगातार परिश्रम करते हुए शरीर को फौलादी बनाए थे। इसलिए फौजी क्षेत्र में हो या संगठक के रूप में दृढ़ता से प्रयास करने के लिए उनकी शरीर बहुत ही मददगार रहा। विषय जो भी हो, लगन से सुनने व यथासंभव लिखने के जरिए विषयों को गहराई से ग्रहरण कर लेते थे। इस तरह की ग्रहण शक्ति की वजह पार्टी लाइन और पॉलिसी के बारे में उन्होंने गहरी समझदारी रखते थे और उसके अनुसार मार्गदर्शन देने के दौरान कार्यनीति तय करते थे। कार्यनीति को लागू करने और उसके लिए कैडरों को तैयार करने के लिए अपनी वर्गसंघर्ष की ज्ञान और दक्षता को पूरी तरह इस्तेमाल करते थे।

यापा नारायणा की व्यक्तित्व और राजनीतिक विकास

यापा नारायण ने विनम्रता को अपने नाम कर लिया। पार्टी के वरिष्ठि कामरेडो

और ऊपरी कमेटियों के सदस्यों के साथ बहुत ही विनम्रता से पेश आते थे। उनके द्वारा बताए गए विषयों को ध्यान से सुनकर, उन्हें लागू करने के लिए बहुत ही प्रयास करते थे। निचले स्तर के कैडरों के साथ स्नेहशील संबंध रखते थे। उनके द्वारा सामना की जारी समस्याओं का शीघ्र चिन्हित कर, उनसे उबरने के लिए बहुत ही मदद करते थे। कैडरों का संदेहों का समाधान करने के अलावा, वे अपने कार्यों में पहलकदमी के साथ शामिल होने के लिए जरूरी मार्गदर्शन देते थे। कुछ बेढंगा कैडरों को सही समय में आलोचना कर उनसे क्रांतिकारी कार्य करवाते थे। पार्टी में कार्यकर्ताओं को सांचे में ढालने में और उनके विश्वास जीतने में कामरेड यापा नारायणा सफल हुए थे। वे पूरी परिवार और अपने बचपना मित्रों को क्रांति के प्रति हमदर्द बनाए थे। वे एक संपूर्ण क्रांतिकारी बनने के लिए उनकी वर्ग और सामाजिक पृष्ठभूमि उन्हें बहुत ही मददगार रहा।

वे राजनीतिक और सैद्धांतिक अध्ययन पर अपना ध्यान केंद्रित करते थे। उनपर काम का दबाव होने के बावजूद, रोजवारी अवश्य राजनीतिक और सैद्धांतिक अध्ययन के लिए समय निकालते थे। राजनीतिक घटनाक्रम पर अपनी समझदारी को समय समय पर सामयिक बनाते हुए अपने सैद्धांतिक बुनियाद को भी मजबूत की। इस दृष्टिकोण से पार्टी लाइन को तेलंगाना की ठोस परिस्थितियों से जोड़कर लागू करते थे। तेलंगाना राज्य कमेटी के प्रवक्ता के बतौर 'जगन' के नाम से राजनीतिक घटनाक्रम पर समय समय पर प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए पार्टी की राजनीतिक समझदारी को जनता तक ले जाते थे। वे तेलंगाना में 'जगन' के नाम से जनता में बहुत मशहूर थे। समय समय पर बदलती राजनीतिक मामलों पर जनता उत्सुकता से देखती हैं कि 'जगन' से क्या वक्तव्य आएगा?

राजनीतिक व सैद्धांतिक मामलों में कैडरों के लिए कक्षाएं चलाते थे। उनके कक्षाओं में सिद्धांत को ठोस परिस्थितियों से जोड़कर, उनके वास्तविक जीवन के उदाहरण दोहराते हुए कैडरों को समझाते थे। इसलिए कक्षाओं के प्रति छात्र दिलचस्पी रखते थे।

वर्ष 2000-2005 के दौरान लक्मु के नाम पर जब वे सीसी प्रोटेक्शन प्लाटून के कमांडर के रूप में कार्यरत थे मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद सिद्धांत, पार्टी दस्तावेज और पॉलिसियों पर एक क्रम तरीके से अध्ययन किए थे। इससे उन्होंने सैद्धांतिक व राजनीतिक मामलों पर अच्छी पकड़ हासिल किए थे। प्रोटेक्शन प्लाटून की कमेटी के विकास के लिए सीसी के साथ उनका भी अच्छा प्रयास रहा था।

उन्होंने अत्यंत हिम्मत व साहस, पहलकदमी व दृढ़ता के साथ पार्टी द्वारा दिए जाने वाले किसी भी कार्यक्रम को सफल बनाते थे। इसलिए वे दुश्मन के लिए ख्वाब बने। उनके क्रांतिकारी जीवन में साहसिक गुरिल्ला कमांडर के रूप में विकसित हुए। एक गुरिल्ला में होने वाले फुर्ती, पहलकदमी और अत्यंत जागरूकता कामरेड हरिभूषण में भरपूर होते थे। इसलिए उन्होंने कई भीषण मुठभेड़ों से बच निकलने में कामयाब हुए। मुठभेड़ों में सरकारी बल घोषणा करते थे कि हरिभषण को मार गिराया गया। लेकिन हरिभषण सफलतापूर्वक मुठभेड़ों से बच निकलते थे। हरिभषण को मारने पुलिस द्वारा 'ऑपरेशन हरिभूषण' ऐलान कर हमले किए जाते थे। लेकिन वे उनके सपनों चकनाचूर करते थे। वे कई मुठभेड़ों से बच निकलकर, फिर मजबूत नेता के तौर पर सामने आते थे और सरकार के सामने और मजबूत चुनौती पेश करते थे। इसलिए तेलंगाना सरकार ने हरिभूषण को मुख्य निशाना बनाकर, कोवर्टों से हो या जहर दिलाने से हो, उन्हें किसी भी तरह मारने की साजिशें रची। हरिभूषण अपनी चतुरता से उन साजिशों को भी नाकाम करते थे। इस क्रम में एक कोवर्ट को भंडाफोड़ कर, उन्हें सफाया किया गया।

कामरेड हरिभूषण न सिर्फ दुश्मन के मुठभेड़ों को नाकाम किया, बल्कि तेलंगाना और दंडकारण्य में पुलिस पर कई हमलों को अंजाम देकर उन्हें सफल बनाया। असंभव माने जाने वाले जो रेड व एम्बुशों को भी संभव बनाते थे। समय के लिए धीरता से इंतेजार करने और अवसर मिलते ही आक्रामकता से हमले करने में वे दक्ष थे। ऐसे हमलों के दौरान कमांड व कंट्रोल के जरिए गुरिल्ला योद्धाओं को समन्वय कर, हमले में तमाम योद्धाओं को साहसिक रूप से शामिल होने का आदेश देते थे। इससे फौजी क्षेत्र में भी उन्होंने कई विजय हासिल किया।

कामरेड हरिभूषण ने पृथक तेलंगाना आंदोलन के लिए और उस राज्य बनने के बाद जनवादी तेलंगाना आंदोलन के लिए बहुत ही सक्रियता से नेतृत्व प्रदान किया। आंदोलन में गोलबंद हुए छात्र, मजदूर, युवा, पत्रकार व कर्मचारियों से मजबूत संबंध बनाए थे। उन तबकों को आंदोलन में दृढ़ता से गोलबंदी की। उन लोगों के साथ जनसंगठनों का निर्माण कर मजबूत किया। उनमें से फुर्तीला होने वालों को पार्टी व पीएलजीए में भर्ती करने की तरह प्रोत्साहित कर कुछ लोगों को भर्ती किया। इस क्रम में कामरेड हरिभूषण को राज्य स्तर पर जनांदोलनों को चलाने की शक्ति हासिल किया। तेलंगाना के आदिवासी इलाकों के मूल आदिवासी समस्याओं पर, विशेषकर जल, जंगल, जमीन, इज्जत, अधिकार के लिए, 1/70 कानून को लागू करने और 5वीं व 6वीं अनुसूची को अमल करने आदिवासियों द्वारा चलाए जा रहे

आंदोलनों का मार्गदर्शन किया। मूल आदिवासी व लंबाड़ा जाति के बीच अंतरविरोध का हल करने के लिए प्रयास किया। इस पूरे प्रयास में पार्टी पॉलिसी के तहत उत्पीड़ित वर्ग के बीच एकता को मजबूत करते हुए, आदिवासियों में मौजूद जमींदारी शक्तियों पर आंदोलन चलाया। आदिवासी जनता को जुझारू रूप से गोलबंद करने और उस आंदोलन चलाने के लिए जरूरी संगठनों को गठित व मजबूत करने का प्रयास मजबूती से जारी रखा। दंडकारण्य को आधार इलाके के रूप में विकसित करने के पार्टी के केंद्रीय कर्तव्य को लागू करने में कामरेड हरिभषण कभी आगे रहा। इसके लिए उन्होंने दंडकारण्य कमेटी के साथ अच्छे तालमेल स्थापित कर, न सिर्फ गुरिल्ला कार्रवाइयों के लिए योजना बनायीं, बल्कि युद्ध कार्रवाइयों के लिए जरूरी पादार्थिक सहायता, चिकित्सा की मदद और निर्माण की मदद पहुंचाने यथासंभव अपने प्रयास करते थे।

कामरेड हरिभूषण में निहित नेतृत्वकारी विशिष्टताओं को सीसी ने देखा और उन्हें बाहर निकालकर विकसित करने के लिए निरंतर प्रयास किया। फौजी क्षेत्र में तरक्की हासिल करने वाले कामरेड के रूप में उन्हें चिन्हित कर कई रेड व एम्बुशों में शामिल होने का अवसर दिया। सेंट्रल इंस्ट्रक्टर की जिम्मेदारी देकर उसके लिए जरूरी प्रशिक्षण दिया। सैद्धांतिक, राजनीतिक व मिलिटरी अध्ययन में मदद दी। कमेटी निर्माण और कार्यशैली पर उन्हें अच्छी शिक्षा दिलायी। उनके विकास के अनुसार समय समय पर उनकी पदोन्नति की। विभिन्न अधिवेशनों व प्लीनमों में शामिल होने का अवसर दिया। इस तरह 2003 और 2011 में आयोजित दंडकारण्य प्लीनमों में शामिल हुए। 2007 में संपन्न एकता कांग्रेस में तेलंगाना से प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए। 2005 में राज्य कमेटी सदस्य के बतौर तेलंगाना में उनकी तबदला हुई। इसके बाद तेलंगाना राज्य कमेटी में फौजी जिम्मेदारी के साथ आर्गनाइजेशन के अवसर भी दिए। तेलंगाना में समय समय पर बदलती राजनीतिक परिस्थितियों पर समझदारी बढ़ाते हुए, कार्यनीति बनाने में सहायता दी। इस तरह 10 वर्षों के समय में वे तेलंगाना राज्य कमेटी के सचिव के तौर पर विकसित होने लायक और पार्टी, पीएलजीए व संयुक्तमोर्चा में अच्छा-खाचा पकड़ हासिल करने लायक लगातार उन्हें सहायता दी।

उनके अंदर सीखने में दृढ़ता, आत्मगत प्रयास और सक्रिय नेतृत्वकारी विशिष्टताओं के साथ सीसी द्वारा दिलायी गयी मदद से उन्होंने 2015 में तेलंगाना राज्य कमेटी सचिव के रूप में और 2018 में सीसी सदस्य के रूप में विकसित

हुए। वे पहली बार 2020 में आयोजित सीसी बैठक में उपस्थिति हुए। सांयोगिक तौर पर वह बैठक उस युवा नेता के लिए अंतिम बैठक हुई। यह सीसी के लिए अपूर्णीय क्षति है। उस बैठक में उन्होंने उनके नेतृत्व वाले तेलंगाना राज्य के क्रांतिकारी आंदोलन पर समग्र रिपोर्ट पेश किया। उस रिपोर्ट पर चर्चा करने के बाद सीसी ने इस निष्कर्ष निकाला कि तेलंगाना में क्रांतिकारी आंदोलन विकास के पथ पर है।

इस स्तर पर विकसित हरिभूषण को देखकर समूची पार्टी व उत्पीड़ित आदिवासी किसान बहुत ही गर्व महसूस किया। वे आदिवासी पृष्ठभूमि से आकर, सर्वहारा पार्टी में एक सच्ची नेता के तौर पर विकसित होना क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित होगा।

कामरेड यापा नारायणा के क्रांतिकारी प्रस्थान

कामरेड यापा नारायणा के जन्मज गांव और उसके आसपास के गांवों को तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष में शामिल होने का अनुभव के अलावा वहां के लोग कम्युनिस्ट राजनीति से परिचित थे। उसके बाद मा–ले ग्रुपों के रूप में कम्युनिस्ट राजनीति उन गांवों में जारी थी। इससे सहज रूप से कामरेड यापा नारायणा में भी कम्युनिस्ट विचार बढ़ाते गए। लेकिन मा–ले ग्रुपों में ऐसी दक्षिणपंथी व अवसरवादी नीति थी जो तेलंगाना संशस्त्र संघर्ष को धोखा देने वाली थी और भाकपा का विरासत वाले सैद्धांतिक व राजनीतिक जड़ से मेल खाती थी। उन मा–ले पार्टियों के प्रति उन्होंने उतना दिलचस्पी नहीं दिखायी।

देश में 1950 के दशक में और 1960 के आरंभ में भाकपा द्वारा लागू की गयी संशोधनवाद और उसके उपरांत भाकपा (मा) के नेतृत्व में उभर कर आयी आधुनिक संशोधनवाद का विरोध करते हुए सच्ची मार्क्सवादी, लेनिनवादी क्रांतिकारियों द्वारा आंतरिक संघर्ष चलाने के फलस्वरूप भारत की उत्पीड़ित जनता के लिए मुक्ति का असली मार्ग दर्शाते हुए नक्सलबाड़ी संशस्त्र आंदोलन फूट पड़ा।

नक्सलबाड़ी व श्रीकाकुलम आंदोलन छात्र व युवा तथा श्रमिक जनता में क्रांतिकारी जोश पैदा किया। 'नक्सलबाड़ी एक ही रास्ता' के नारे देश में गूज उठा। लेकिन उन आंदोलनों में उभर कर आए कुछ संकीर्ण रूझान और तीव्र दमन के चलते आंदोलन अस्थायी रूप से पीछे हटना पड़ा। उन आंदोलनों से पार्टी सही सबक लेकर, जनदिशा को आगे ले आयी। विशेषकर, आंध्रप्रदेश की राज्य कमेटी ने 'आत्मालोचनात्मक' रिपोर्ट बनाकर, संशस्त्र आंदोलन के अलावा जनसंगठन व

जनांदोलन के जरूरत को समझा और उसके मार्गदर्शन में आंध्रप्रदेश में तत्कालीन पार्टी ने जनसंगठनों के निर्माण को प्राथमिकता दी। इससे 1970-74 के बीच कई क्रांतिकारी जनसंगठनों का निर्माण हुआ। इसमें से आपात्काल से पहले गठित रॉडिकल स्टूडेंट्स यूनियन (आर.एस.यू.) ने छात्र-छात्राओं को गोलबंद किया। आपात्काल के बाद पार्टी ने गांवों में अपना प्रयास शुरू किया, तो 1978 में जगित्याला आंदोलन फूट पड़ा। 1980 में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा-ले) (पीपुल्सवार) की केंद्रीय कमेटी का गठन हुआ। पार्टी के नेतृत्व में गुरिल्ला जोन परस्पेक्टिव (परिप्रेक्ष्य) बनायी गयी और समग्र योजना के साथ गुरिल्ला दस्तों का निर्माण शुरू किया गया। एक तरफ व्यापक इलाकों में जनसंगठन, किसान व अन्य संघर्षों का निर्माण करते हुए, दूसरी तरफ ग्रामीण इलाके में गुरिल्ला दस्तों के नेतृत्व में जनता को गोलबंद कर गुरिल्ला संघर्षों के लिए तैयारी की। 1980-88 के बीच चले आंदोलन सरकार के भीषण दमन का सामना करते हुए ही उत्तर तेलंगाना व दंडकारण्य में 1988 तक गुरिल्ला जोनों के आकार ले लिए। उत्तर तेलंगाना व दंडकारण्य में उभरे कृषि क्रांति ने वे इलाके गुरिल्ला जोनों के रूप में विकसित होने में अपना योगदान दिया।

1990 में अस्थायी तौर पर दमन में छूट दिए जाने के समय में, पार्टी व जनसंगठनों ने जनता को बड़े पैमाने पर गोलबंद की। उस समय कृषि क्रांति मजबूती से आगे बढ़ी। फलत: मई 1990 में वरंगल में आंध्रप्रदेश किसान मजदूर संगठन के सभाएं 10 लाख के जनता के साथ संपन्न हुआ। उन सभाओं पर बुर्जुआ मीडिया ने यह तक व्याख्या कर डाली कि 'न भूतो न भविष्यत'। पूरे 80 के दशक में क्रांतिकारी आंदोलन ने कई अवरोधों का सामना करते हुए ही मजबूती से आगे बढ़ा। वरंगल के सभाएं संपन्न होने के बाद पूरे तेलंगाना में एक नयी पीढ़ी ने क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हुई। यह नयी पीढ़ी ने 90 के दशक से क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। यह पीढ़ी के युवक थे कामरेड नारायणा। वे क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल होकर एक महान कम्युनिस्ट नेता और गुरिल्ला युद्ध के विशेषज्ञ के रूप में अपने जीवन को उन्नत तरीके से जारी रखा।

जगित्याला जैत्रयात्रा से लेकर आदिलाबाद, करीमनगर, वरंगल व निजामाबाद के अविभाजित जिलों में सामंत-विरोधी आंदोलनों उभार आया। इन आंदोलनों के स्फूर्ति से छात्रों में क्रांतिकारी चेतना की लहर दौड़ी। इससे सैकड़ो छात्र रॉडिकल छात्र संगठन में शामिल होकर नवजनवादी क्रांति के कार्यक्रमों से अपनी सहमति जताएं।

छात्रों की समस्याओं पर न सिर्फ कई आंदोलन चलाएं, बल्कि किसान आंदोलनों को अपने समर्थन दिया। फुर्तीले छात्र जो छात्र आंदोलनों से उभरे, वे किसान आंदोलनों का भी नेतृत्व प्रदान किया और गुरिल्ला दस्तों में भर्ती होकर सशस्त्र आंदोलन का मर्गदर्शन दिया। कामरेड यापा नारायणा भी नक्सलबाड़ी, श्रीकाकुलम और जगित्याला सशस्त्र किसान आंदोलनों से उत्साहित होकर क्रांतिकारी राजनीति की तरफ कदम बढ़ाए। 1989 में रॉडिकल छात्र संगठन में शामिल होकर छात्रों के आंदोलनों में हिस्सा लिया। कामरेड नारायणा जब रॉडिकल छात्र संगठन में सक्रिय रूप से कार्यरत थे, उनके अंदर क्रांति के प्रति समर्पण बढ़ा। वे आंदोलन के हिस्सा बन गए।

1980 के दशक के अंत तक तेलंगाना में दुश्मन के बलों का सामना करते हुए गुरिल्ला जोन को विकसित करने के लिए जनसंगठन और जनता की जोश बढ़ाकर जनसेना निर्माण करने का प्रधान कर्तव्य पार्टी के सामने था। इस कर्तव्य को पूरा करने पार्टी ने कई छात्र और युवाओं को जगली दस्तों में भेजी थी। उसमें से कामरेड यापा नारायणा भी एक थे। कामरेड नारायणा ने पार्टी के आह्वान पर हरिभूषण के नाम से पाकाला-कोत्तागुड़ेम इलाके में जाकर काम किया।

इस तरह उपेशेवर क्रांतिकारी के रूप में अपने क्रांतिकारी जीवन को आरंभ कर कामरेड राजम कोटी और कामरेड मोरमपल्ली वेंकन्ना तथा कामरेड श्रीशैलम के साथ मिलकर काम किया। वहीं पर एक साल 1+1 टीम में कामरेड राजम कोटी के साथ काम किया। जनता को संगठित किया। गांवों में युवाओं को गोलबंद करते हुए युवा संगठनों का निर्माण किया। क्रांतिकारी आंदोलन के लिए अवरोध बने दक्षिणपंथी अवसरवाद के खिलाफ जनता को संगठित किया। सामंत-विरोधी आंदोलन चलाए। मुख्य रूप से न्यू डेमोक्रसी पार्टी की सामंतवाद-प्रायोजित और क्रांति-विरोधी नीतियों के खिलाफ सैद्धांतिक संघर्ष चलाया। तो न्यू डेमोक्रसी पार्टी

ने कामरेड्स राजम कोटी और हरिभूषण को हत्या करने की साजिशें रची। जब वे किसी काम के लिए मडागुड़ेम गए, उनपर एक योजनानुसार हमला कर कामरेड राजम कोटी को पकड़कर उन्हें लापता किया। कामरेड यापा नारायणा वहां से किसी तरह बच निकलने में कामयाब हुए। उस के बाद उन्होंने कामरेड श्रीशैलम को भी पकड़कर उनकी हत्या की। मोरमपल्ली वेंकन्ना पुलिस के हमले में शहीद हो गए। उन कामरेडों की शहादत की स्फूर्ति से कामरेड नारायणा के इरादे और मजबूत हुए।

1991 में दस्ते में शामिल होकर एक साल तक नेक्कोंडा दस्ते में काम किया। उसके बाद पांडवा दस्ते में उनकी तबदला हुई। तब से लेकर 1998 के अंत तक वहीं पर काम किया। कमांडर व संगठक के रूप और डिविजन कमेटी के सदस्य के रूप में विकसित होकर अपनी जिम्मेदारियां सक्षम तरीके से निभाए।

1992 में ही उन्होंने पांडवा दस्ते के कमांडर और संगठक के रूप में अविभक्त खम्मम जिले के विस्तार इलाके में जनता को संपर्क किया। इल्लेंदु, बय्यारम, नरसमपेटा, पाकाला-कोत्तागुड़ेम और गुंडाला इलाकों में, जहां कामरेड हरिभूषण ने काम किया, वहां के गांव के दबंगों, सूदखोरों और सामंतियों के बल पर न्यू डेमोक्रसी पार्टी का निर्माण था। वे जनता को नियंत्रित करते थे। जहां वे कमजोर हैं, वहां राजतंत्र के साथ सांठगांठ होकर अपने दबदबे कायम रखते थे। इनके पूरे व्यवहार क्रांति के विकास के लिए अवरोध बना हुआ था। कामरेड हरिभूषण ने सीढ़ी वाली सिद्धांतों और वर्ग समझौता वाली राजनीति से जड़ जमाए हुए न्यू डोमोक्रसी के गढ़ों को तोड़ दिया और वहां क्रांतिकारी जनाधार बनाया।

उस समय न्यूडेमोक्रसी पार्टी ने हमारी पार्टी पर हथियारों के साथ संघर्षों में उतरते थे। जनता पर हमले करते थे। इनके पतन इतना हो गया कि क्रांतिकारियों की हत्या कर लापता तक करते थे। इनके वर्ग समझौतावाली दक्षिणपंथी राजनीति से कामरेड हरिभूषण ने लोहा लिया और साथ-साथ समस्याओं के आधार पर उनसे एकता साबित करने का प्रयास किया। विभिन्न तरह के मा-ले ग्रुपों में मुख्य रूप से न्यू डेमोक्रसी के क्रांति-विरोधी नीतियों का भंडाफोड़ करते हुए सैद्धांतिक संघर्ष चलाया। व्यवहार में न्यू डेमोक्रसी के साथ आ रही समस्याओं का हल करने बहुत ही धीरता से सामंजस्य के साथ पत्राचार भी चलाया।

कामरेड हरिभूषण अपने क्रांतिकारी प्रस्थान में पार्टी में सीढ़ी दर सीढ़ी विकसित होते हुए उच्चस्तर की जिम्मेदारियां निभाए थे। 1992 में दस्ता कमांडर व संगठक के रूप में, 1996 में खम्मत जिला कमेटी सदस्य के रूप में जिम्मेदारी ली। वर्ष

2000 में केंद्रीय कमेटी के प्रोटेक्शन प्लाटून में उनकी तबदला हुई, जहां वे 2005 तक रहे। कुछ समय तक सेंट्रल इंस्ट्रक्टर के रूप में भी काम किया। 2005 में सीसी ने स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य के रूप में उनकी पदोन्नति कर उत्तर तेलंगाना एसजेडसी में उनकी तबदला की। 2015 के प्लीनम में तेलंगाना राज्य कमेटी सचिव और 2018 नवंबर में केंद्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुने गए।

उन्होंने 1995 में आयोजित उत्तर तेलंगाना स्पेशल जोन के पहला अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए। 2007 में आयोजित उस स्पेशल जोन के दूसरा अधिवेशन में, 2011 प्लीनम में, तेलंगाना राज्य का गठन के बाद 2015 व 2019 में संपन्न सिलसिलेवार प्लीनमों में प्रतिनिधि भी थे और उन्हें नेतृत्व भी किया तथा राजनीतिक और सांगठनिक समीक्षाओं को समृद्ध बनाने में सक्रिय भूमिका अदा की।

जनवरी 2007 में आयोजित एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में उत्तर तेलंगाना से उपस्थित तीन प्रतिनिधियों में से कामरेड हरिभूषण एक थे। उस एकता कांग्रेस में सक्रिय रूप से हिस्सा बनकर उसमें लिए गए तमाम महत्वपूर्ण निर्णयों में अपनी भागीदारी निभायी। उसके बाद वहां तय किए गए केंद्रीय और प्रधान कर्तव्यों और कार्यनीति को तेलंगाना में न सिर्फ अन्वय किया, बल्कि प्रभावशाली ढंग से लागू किया। फलतः तेलंगाना में क्रांतिकारी आंदोलन कुछ हद तक विकासित हुए।

नवंबर 1956 में गठित आंध्रप्रदेश राज्य में तेलंगाना जनता की मनोभावनाओं से परे तेलंगाना को जबरन शामिल करने समेत दशकों वर्ष तक तेलंगाना पर आंध्र के तटीय इलाके के पूंजीपतियों के शोषण बेरोकटोक जारी रहने की वजह से भेदभाव, शोषण, आत्मसम्मान और स्वराज्य की मांगों के इर्दगिर्द राजनीतिक रूप से पृथक तेलंगाना राज्य की मांग आगे आयी। पहले पृथक तेलंगाना राज्य के गठन की मांग को लेकर 1969 में आंदोलन का रूप ले लिया। उस सयम केंद्र व राज्य सरकारों के दमन समेत चेन्नारेड्डी के विश्वासघात के चलते आंदोलन अस्थायी तौर पर थम गया। 1996 में वरंगल घोषणापत्र के जरिए आंदोलन के अंतिम चरण आरंभ हो गया। दिसंबर 2009 तक उस आंदोलन में उभार आया। ऐसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का क्रांतिकारी आंदोलन के अनुकूल तब्दील करने में कामरेड हरिभूषण ने बहुत ही प्रयास किया।

पार्टी ने जनवादी पृथक तेलंगाना के कार्यक्रम बनाकर उसे व्यापक रूप से जनता में ले गयी। इससे 2009 में आंदोलन में एक मोड आने से एक बड़ा उभार आया। इस उभार ने पूरे देश को प्रभावित किया। ये आंदोलन उस्मानिया विश्वविद्यालय

को केंद्र-बिंदु बनाया। तेलंगाना के दस जिलों के लोग ग्राम स्तर से लेकर राज्य स्तर तक जहां-तहां जेएसी गठित कर आंदोलन चलाए। छात्र, बुद्धिजीवी, कवि, कलाकार, लेखक, वकील, डॉक्टर, मजदूर, शिक्षक, कर्मचारी, विशेषकर महिलाएं बड़े पैमाने पर गोलबंद हई। इतनी जुझारू जनउभार पैदा कर पृथक राज्य के गठन में कामरेड हरिभूषण ने अपनी प्रमुख भूमिका निभायी।

तेलंगाना में क्रांतिकारी आंदोलन अस्थायी तौर पर पीछे हटने के बाद, फिर से सामंतियों, दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों का शोषण और गंभीर हो गए। इससे अंतरविरोध तेज हो रहे हैं। हजारों लोगों को विस्थापित करने वाले पोलवरम डेम, मेडिगड्डा, अन्नारम, कंतनापल्ली, मल्लन्ना सागर जैसे कई भारी सिंचाई परियोजनाओं, ओपन कास्ट खदानों, अविभक्त आदिलाबाद जिले के कव्वाल टाइगर जोन, बिजली परियोजनाओं, मामिडि गुंडाला के डोलमाईट व ग्रानाइट खनन, महबूबनगर जिले के युरेनियम खनन, बय्यारम इस्ताप उद्योग के खिलाफ कई जुझारू आंदोलनों का कामरेड हरिभूषण ने नेतृत्व प्रदान किया और हजारों लोगों को गोलबंद की। इससे हमारी पार्टी एक राजनीतिक शक्ति के रूप में और विकसित हुई। चूंकि क्रांतिकारी आंदोलन के लिए वस्तुगत परिस्थितियां अनुकूल हो चला, तो इन जुझारू आंदोलनों से नई शक्तियां आना शुरू हो गया और वे पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं के रूप में और समर्थक के रूप में आ आकर जनयुद्ध में शामिल हो गए।

साहसिक सैनिक कमांडर के बतौर कामरेड हरिभूषण का प्रयास

उत्तर तेलंगाना को आधार इलाका बनाने के लक्ष्य को लेकर गुरिल्ला युद्ध तेज करने के लिए विशेष फौजी फरमेशन विकसित करने के पार्टी के निर्णय के मुताबिक वहां 1996 में पहला प्लाटून बनाया गया। 1998 में और एक प्लाटून समेत कई एसजीएस का निर्माण हुए। पहला प्लाटून के कमांडर आंदोलन के जरूरत अनुसार तबदला हो जाने से उस स्थान में नवंबर 1998 में पहला प्लाटून कमांडर के रूप में कामरेड हरिभूषण ने जिम्मेदारी ली। तब से लेकर कई फौजी कार्रवाइयों में शामिल होकर, उन्हें नेतृत्व प्रदान कर उन्होंने फौजी क्षेत्र को विकसित करने में विशेष योगदान दिया।

इस दौरान केंद्र में भाजपा और राज्य में टीडीपी सत्ता में रहकर संयुक्त रूप से हमले चलाए। 1985 और 1991 में चलाए गए दो दमन अभियानों को पार्टी और जनता के वीरतापूर्ण संघर्ष के जरिए हराए गए। 1996 के बीच से दुश्मन द्वारा एलआईसी अभियानों को ठोस रूप से अमल में लाया गया। इन उन्मूलन अभियानों

को हराने और गुरिल्ला जोन को मजबूत करने के लक्ष्य से पार्टी ने समूचे उत्तर तेलंगाना में 1996 से कई एम्बुश और रेड चलाए, जिसमें फौजी विजय हासिल किया और दुश्मन का मनोबल गिर गया तथा उनके आक्रामकता पर एक हद तक रोक लगायी। ऐसी पृष्ठभूमि में ये कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कामरेड हरिभूषण के नेतृत्व में संचालित कार्रवाइयां भी दुश्मन के दमन का मुकाबला करने में बहुत ही प्रभावित किया।

जनवरी 1997 में खम्मम जिले के करकागुड़ेम पुलिस थाना पर रेड किया गया। इसमें 16 पुलिस मारे गए। उनके पास से हमारे गुरिल्ला योद्धा हथियार जब्त किए। इस कार्रवाई में कामरेड हरिभूषण ने स्टाप पार्टी के कमांडर के रूप में जिम्मा निभायी। यह हमला सफल रहा और दुश्मन का मनोबल गिरा दिया। हमारी पीएलजीए ने 1999 में बेंल्लमपल्ली के रेलवे पुलिस थाना पर हमला किया। इस हमले में पुलिस को घायल कर, तीन 303 रायफल व दो रिवाल्वर लेकर आयी। इस कार्रवाई का कमांडर कामरेड हरिभूषण थे।

2000 में महाराष्ट्र के आसरेल्ली थाना पर पीएलजीए ने रेड कर कुछ पुलिस वाले को घायल कर आत्मसमर्पण करवाया, 20 एसएलआर, पांच 303 रायफल और एक रिवाल्वर को जब्त कर ली। इस कार्रवाई में कामरेड हरिभूषण ने कमांडर के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस हमले से पहले उन्होंने स्वयं गांव वालों की मदद से पुलिस वालों से परिचय स्थापित कर थाना के नजदीक जाकर रेक्की किया और योजना बनायी। नदी पार कर योजना को सफल बनाने के जरूरी तमाम तैयारियां की। पीएलजीए बलों को योजना के बारे में अक्षुण्ण बनाकर उन्हें जिम्मेदारी सौंपते हुए उत्साहित किया। उसी उत्साह के साथ आसरेल्ली पुलिस थाना पर पीएलजीए ने हमला बोला और विजय हासिल की। इस कार्रवाई को सफल बनाने में कामरेड हरिभूषण ने दृढ़निश्चय के साथ प्रयास किया।

1998 में केंद्र व राज्य सरकारें केद्रीय गृहमंत्री के नेतृत्व में संयुक्त समन्वय कमेटी (जेसीसी) का गठन कर, उत्तर तेलंगाना के क्रांतिकारी आंदोलन पर दमन तेज किया और वर्ष 2000 में संयुक्त ऑपरेशनल कमांड (जेओसी) को गठित किया। इस दौरान दुश्मन के किलाबंदी (फोर्टिफिकेशन), सरप्राइज एटैक, घेरा डालो-उन्मूलन करो और दमनकारी हमले के जरिए हमारे दस्ते को नुकसान पहुंचाए। अविभाजित आंध्रप्रदेश के विशेष ग्रेहाउंड्स बल हमारी पार्टी के गुरिल्ला दस्तों पर अचानक हमले कर नुकसान पहुंचाए। दुश्मन के इन बलों का सामना

करना ही क्रांतिकारी आंदोलन के फौरी कर्तव्य बन गए।

कामरेड हरिभूषण ने उत्तर तेलंगाना में 2005 से 2015 तक राज्य के मिलिटरी प्रभारी की जिम्मेदारियां निभायी। इस दौरान गुरिल्ला युद्ध के विकास के लिए बहुत प्रयास किया।

तेलंगाना के आंदोलन अस्थायी तौर पर पीछे हटने के बाद, याने 2002 के बाद, गुरिल्ला कार्रवाइयों में कमी आयी। 2005 के आखिरी में, कोमरारम, गुंडाला, शेट्टिपल्ली गांवों के दायरे में, पहले के मुकाबले कुछ गुरिल्ला कार्रवाइयां हुईं। ये कार्रवाइयां दुश्मन के बलों को कुछ हद तक परेशानी में डाल दी। कामरेड हरिभूषण ने हमारे पीएलजीए बलों को बहुत प्रेरित कर उन कार्रवाइयों में उतारा और अंजाम दिया।

कामरेड हरिभूषण ने पुलिस थाने पर हमले करने की कई योजनाएं बनाकर उन्हें लागू करने पूरी तैयारियां करते थे। डाइरेक्शनल माइंस के साथ विस्फोट करने बड़े बड़े कंटाइनरों और पानी टैंक वाली गाड़ियां के साथ तैयारियां सक्षम तरीके से करते थे। हथियार व कारतूस इकट्ठा कर युद्ध जरूरतें पूरा करने पर पहुत परिश्रम करते थे। बड़े एरिया हथियारों (इंप्रूवाइज्ड प्राथमिक आर्टिलरी), जिसकी वजह से गुरिल्ला युद्ध में क्रांतिकारी बदलाव आया, के तैयारियों में भी कामरेड हरिभूषण के प्रयास बहुत हद तक मददगार रहा, ऐसा कह सकते हैं।

उत्तर तेलंगाना (तेलंगाना) में क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह उन्मूलन करने के लक्ष्य से शोषक-शासक वर्गों ने कई दमन अभियान चलाए। कुछ अभियान कामरेड हरिभूषण को निशाना बनाकर चलाए। उसीके तहत दुश्मन द्वारा 2016 में बोट्टेम और 2018 में पूजारी कांकेर में हमले का अंजाम दिए गए। बोट्टेम में पुलिस के हमले के दौरान कामरेड हरिभूषण पेशंट थे। बावजूद, उन्होंने पूरी शक्ति को निकालकर हिम्मत से दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए रिट्रीट हुए। दुश्मन के ऐसे कई हमलों का बहुत ही हिम्मत व साहस के साथ प्रतिरोध करते हुए सुरक्षित बच निकले थे।

क्रांतिकारी आंदोलन को उन्मूलन करने दुश्मन द्वारा अंजाम दिए गए दमन अभियानों को हराने के लिए कामरेड हरिभूषणकई टीसीओसीयों में नेतृत्व प्रदान कर सफलताएं हासिल करवाया। दंडकारण्य और तेलंगाना के बीच अच्छे तालमेल हासिल कर संयुक्त टीसीओसीयों के जरिए दुश्मन के हमले का मुकाबला करने पर बहुत ही प्रयास किया।

2001 में केंद्रीय कमेटी के प्रोटेक्शन प्लाटून के कमांडर के रूप में रहते हुए विभिन्न मिलिटरी कार्रवाइयों का नेतृत्व किया। रणनीतिक इलाके में जहां भी दुश्मन घुसपैठ कर कूंबिंग अभियान चलाने पर, वहां तेजगति से जाकर दुश्मन के बलों पर कामरेड लक्मू दादा के नेतृत्व में पीएलजीए के बल हमले करते थे। 2001 में छत्तीसगढ़ के कांकेर जिला कोइलीबेड़ा ब्लाक के बांदे पुलिस कैंप पर पीएलजीए ने हमला किया। उस हमले में कामरेड हरिभूषण दूसरी असाल्ट का कमांडर थे। लेकिन यह हमला विफल रहा।

2006 में तेलंगाना के पीएलजीए बल रिट्रीट होकर दंडकारण्य के बलों से मिलकर संयुक्त रूप से पुलिस बलों पर हमला किया। कोंटा इलाके में गोड्डली गांव के पास हमारी सूचना पाकर एसपीओ बल हमारे ऊपर हमले करने आए। पीएलजीए ने उन्हें पहले ही देखकर उनपर फायरिंग करते हुए एक किलोमीटर तक उन्हें भगाया। उसी समय में अरनपुर में सीआरपीएफ बलों पर घात लगाकर हमला किया गया जिसमें दो पुलिस घायल हो गए। इस कार्रवाई का भी कामरेड हरिभूषण नेतृत्व किया।

2004 में माड डिविजन के ताकिलोड के पास पुलिस आने की सूचना पाकर पीएलजीए ने हमला किया। उस हमले में दो पुलिस मारे गए और तीन घायल हो गए। इस हमले में कामरेड हरिभूषण ने कमांडर की जिम्मेदारी निभायी। इसी वर्ष नारायणपुर जिला ओरछा ब्लाक के डुंगा गांव के पास अंजाम दिए गए एम्बुश में दो पुलिस घायल हो गए। इस एम्बुश में वे ही जिम्मेदारी निभायी।

ओड़िशा के कोरापुट जिला मुख्यालय में, 2004 फरवरी में चलाए गए मल्टी रेड, देश के क्रांतिकारी इतिहास में ही प्रमुख रेड के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उस हमले में पीएलजीए ने 535 हथियार लेकर आयी। वहां मात्र एक ही पुलिस मरा। यह कार्रवाई दुश्मन के लिए बड़े परेशानी पैदा की। बहुत ही हिम्मत व साहस दर्शाते हुए पीएलजीए ने महत्वपूर्ण जीत दर्ज किया। इसमें कामरेड हरिभूषण जिला मुख्यालय पर हमले करने वाले एक असाल्ट बैच के कमांडर के बतौर नेतृत्व किया। कैडर को हिम्मत बांधकर प्रोत्साहित किया।

2007 में बीजापुर जिला रानीबोदली थाना पर पीएलजीए ने रेड किया। इस कार्रवाई में 55 एसपीओ व सीएएफ पुलिस को सफाया किया। जनता पर क्रूर व पाशविक रूप से हमले करने वाले प्रतिक्रांतिकारी एसपीओ बल इतनी बड़ी संख्या में सफाया हो जाने से जनता ने त्योहार मनायी। जनता को उत्साहित करने वाली इस

कार्रवाई में कामरेड हरिभूषण शामिल था, पीएलजीए को प्रेरित करते हुए उसे नेतृत्व किया था।

2013 में सुकमा जिले के मिनपा गांव के पास नए कैंप बनाने पुलिस बल आए। पीएलजीए बल 13 दिनों तक कैंप को घेराव कर हमला किया। इस हमले में कुल 7 पुलिस का सफाया हुआ। इसके चलते उस कैंप को 13 दिन के बाद हटाने में पुलिस मजबूर हुई। उनकी वापसी के दौरन भी पीएलजीए ने उनपर हमला किया। कामरेड हरिभूषण इस अभियान का नेतृत्व किया।

2021 में 'ऑपरेशन प्रहार' के तहत बीजापुर जिले के जीरागुड़ेम गांव के पास सूचना के आधार पर हमें नुकसान पहुंचाने के लिए पुलिस के 2 हजार संयुक्त बल की तैनाती हुई। इसकी सूचना पाकर पीएलजीए ने दुश्मन के 750 वाले टुकड़े को घेर लिया। इस वीरतापूर्ण संघर्ष चार घंटों तक चला। आधुनिक हथियारों से लैस दुश्मन को दो किली मीटर तक पीएलजीए ने दौड़ा-दौड़ाकर भगाया। इस संघर्ष में कामरेड लक्मू दादा ने हिस्सा लिया। इस टीसीओसी में उन्होंने कोर ग्रुप और कमांड में रहकर न सिर्फ निर्णायक भूमिका निभायी, बल्कि तमाम किस्म के सहायता किया।

कामरेड यापा नारायणा का निधन

बात जो भी हो आप बताने पर, कामरेड हरिभूषण सिर नीचा कर सुनते थे। खुद बात करते समय उन्होंने आप के आंखों आंख मिलाकर बात करते थे। बात के अनुसार लयबद्ध तरीके से हाथ घुमाते थे। हमेशा वे दूसरों को सहायता करने के सोच में रहते थे। वे हमेशा गुप्त कामकाज के तौर-तरीके पर जागरूक रहते थे। व्यवहार के संबंध में उनके बातों में कहा जाय तो, उनके अंदर "हमेशा कोई भी काम करने की इच्छा होती थी"। इस तरह वे कभी कोई भी काम में लगे रहते थे। ये तमाम कार्य सिर्फ क्रांति के लिए ही। क्रांति के सिवा उन्हें दूसरा सोच नहीं होता था। इसी के दौरान उनके सेहत बिगड़ता गया। उनकी सेहत को ध्यान में रखकर रोज दवाइयां लेने के अलावा सुबह व्यायाम करते थे। बावजूद, उनकी सेहत बिगड़ता गया। अंत में कोरोना महामारी से ग्रसित होकर, पहले से ही दम बीमारी, ब्रोंकाइटिस व रक्तचाप से जूझने वाले कामरेड हरिभूषण दिल का दौरा पड़ने से सांस बंद होकर जान चली गयी। दुश्मन के मुठभेड़ों में कामरेड हरिभूषण की हत्या करने की सारी योजनाएं विफल रही। किंतु कोरोना महामारी उन्हें ऐसा मौका नहीं दिया। साम्राज्यवादियों द्वारा पैदा की गयी कोरोना महामारी ने विश्वभर में लाखों लोगों

को अपने चपेट में ले लिया। अंतमें क्रांतिकारियों को भी अपने चपेट में ले रहा है। कोरोना की दूसरी लहर में ही कुछ क्रांतिकारियों को कोरोना बीमारी सक्रमित हुई। कोरोना की इस दूसरी लहर की चपेट में आकर ही कामरेड यापा नारायणा उर्फ हरिभूषण शहीद हुए। मानव जाति की विनाश का कारण बने कोरोना का या उस तरह की महामारियों का सामना करना है तो, इस धरती से साम्राज्यवाद को उखाड़ना जरूरी है। हमारा देश में साम्राज्यवाद की दासता करने वाली भारत देश की अध औपनिवेशिक-अर्धसामंती व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करने वाले दलाल नौकरशाह पूंजीपति व सामंती वर्गों उखाड़ना जरूरी है। इसके लिए भारत देश में दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए नवजनवादी क्रांति को सफल बनाना होगा। यही कामरेड यापा नारायणा के लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगाी। आइएं! इस कार्य को पूरा करने हम तमाम लोग दृढ़ता के साथ आगे बढ़ें।

"जीवन से सीखे गए सबक और सामाजिक चलन को समझने; कठोर क्रांतिकारी युद्ध में ज्वार-भाटों और हार-जीतों का सामना करने वाले अनुभव होने; सिद्धांत और इतिहास को गहराई से अध्ययन करने; कई मुश्किलों के बीच क्रांतिकारी आंदोलनों का नेतृत्व करने; कैडरों का विश्वास हासिल कर, दूरदर्शता व सूक्ष्मदर्शता से जीवन को उत्पीड़ित जनता व क्रांतिकारी आंदोलन के लिए समर्पित करने वाले ही सच्ची क्रांतिकारी नेता के रूप में इतिहास में शामिल होंगे। कामरेड यापा नारायणा उस श्रेणी के युवा नेता थे। वे सदा के लिए इतिहास में रहेंगे।"

28 जुलाई, 2021 को आयोजित कामरेड यापा नारायणा (हरिभूषण, लक्मु दादा) और कुछ क्रांतिकारियों की स्मृति सभा की तसवीर